International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 3, March - 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

नारी मुक्ति आन्दोलन मे ज्योतिबा फुले की भूमिका

लेखकः किरण

गांव व डा0 लाखनमाजरा

तहसील महम जिला रोहतक

पिनकोड 124514

संक्षेपिकाः—

भारतीय इतिहास मे अनेक विभूतिंया पैदा हुई जिन्होने अपने अथक प्रयासों से उस समय जर्जर हो चुके राष्ट्र

को नवजीवन प्रदान किया था । जैसेः— राजा राम मोहन राय, विवेकानन्द, ज्योतिबाराव, गोबिन्दराव फुले, सावित्री बाई फुले, इत्यादि ।

इन महान् विभूतियों मे ज्योतिबाराव गोविन्दराव फुले का अह्मं अग्रणी स्थान हैं। वे महिला व नारी मुक्ति आन्दोलन के प्रमुख नेता थे।

19 वी सदी मे छुआछूत, सतीप्रथा, बाल—विवाह तथा विधवा—विवाह निषेद जैसे कुरीतियां फैली हुई थी उक्त सामाजिक बुराईयां

किसी प्रदेष विषेष मे ही सीमित न होकर सम्पूर्ण भारत मे फैली हुई थी। महात्मा फूले एक दलित नेता एंव समाज सुधारक थे।

दलित होने के बावजूद व हिन्दु रूढिवादियों, अस्पृथ्यता व जातिवाद के घोर विरोधी थे। इन्होने समाज मे व्यापत इन बुराईयों को दुर करने के लिए सत्यषोधन समाज का निर्माण किया। महात्मा फूले ने समाज की रूढिवादी परम्पराओं से लोहा लेते हुए कन्या विद्यालय खोले इस कार्य मे उनकी पत्नी सावित्रीबाई फूले ने बढ—चढकर साथ दिया ।

भूमिका :—

उन्नीसवीं षताब्दी मे व्यापत सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने मे ज्योतिबा राव फुले का अहम योगदान रहा हैं। दलित परिवार मे जन्म लेने के पष्चात भी उन्होने अनेक नारी विरोधी कुप्रथाएं जिनके उपर ब्राहमणो एंव पुरोहितों के पाखण्ड और आडम्बर हावी हो गए थे। सम्पूर्ण नारी समाज इससे प्रभावित हो चुका था। ऐसी रूढियों और बन्धनो के कारण हिन्दू धर्म मे निंरतर गिरावट आती जा रही थी। अज्ञानता के अन्धकार, कर्मकाण्ड, वर्णभेद, जात–पात, बाल–विवाह, मुडंन तथा सती प्रथा आदि कुप्रथाओं से सम्पूर्ण नारी जाति व्यथित थी। नारियों को सम्पूर्ण अधिकारों से वंचित रखा गया था। नारियों को उनके अधिकार एंव समाज मे फैली अनेक कुरीतियों को दूर करने के लिए ज्योतिबा राव फूले ने अहम योगदान दिया।

नारी मुक्ति आंदोलन में ज्योतिबा फुले का योगदान

उन्नीसवीं सदी में नारी गुलाम रहकर सामाजिक व्यवस्था की चक्की मे पिसती रही। अज्ञानता के अंधकार, कर्मकांड, वर्णभेद, जात–पात, बाल विवाह, मुंडन, सती प्रथा, आदि कुप्रथाओं से सम्पूर्ण नारी जाति व्यथित थी। पण्डित व धर्म गुरू भी यह कहते थे की नारी पिता, भाई, पति व बेटे के सहारे बिना जी नही सकती। मनु समृति ने तो मानों नारी जाति के अस्तित्व को ही नष्ट कर दिया था। मनु ने देव वाणी के रूप मे नारी को पुरूष की काम वासना पूर्ति का एक साधन मात्र बताकर पूरी नारी जाति के सम्मान का हनन करने का ही काम किया। हर कुकर्म को धर्म के आवरण से ढंक दिया जाता था। हिन्दु षास्त्रों के अनुसार नारी और षूद्रों को विद्या का अधिकार प्राप्त नहीं था और कहा जाता था कि अगर नारी को षिक्षा मिल जाएगी तो वह कुमार्ग पर चलेगी जिससे घर का सुख चैन नष्ट हो जाएगा।

19 वीं षताब्दी मे स्त्रियों को किसी भी धार्मिक एंव सामाजिक कार्य मे भाग लेने की अनुमति नही दी जाती थी। उन्हे प्रत्येक सामाजिक एंव धार्मिक अनुष्ठान हेतु अपवित्र एंव अयोग्य माना जाता था। विधवाओं को अषुभ व अपवित्र माना जाता था । भारतीय समाज मे स्त्रियों का जीवन नरक के समान हो गया था। उसकी समस्त खुषियां छीन ली गई थी। विधवाओं की दुर्दषा के सम्बंध मे फूले अपनी एक रचना के माध्यम से पूछते हैं। '' यह किस दुनिया का न्याय है कि पति मरते ही औरत पति के षव के पांव का अगूंठा अपने हाथ मे लेकर हज्जाम

के हाथों अपना सिर मुंडवा ले तन पर चढे हुए सभी गहने बूढे ससुर के हाथ मे रखकर स्वंय अपने हाथों मे तुलसी की माला पहनें भिस्वादिनी हो जाए, मीठे पदार्थो को बिल्कुल न खाने का सकंल्प करे, एक के बाद एक लगातार उपवास करे। नाष्ते मे अगर कुछ ना मिले तो सारा दन बिना खाए–पीए गुजारा करे और सारी उम्र घर के तुच्छ कामों मे अपने आप को झोंक दे यह कहा तक न्यायोचित हैं। ''

जिस समय सभी समाज सुधारक महिलाओं के अधिकारों तथा परिवार और समाज मे उनकी स्थिति पर फोकस कर रहे थे, उस समय महात्मा फुले ने वर्णव्यवस्था और जातिगत व्यवस्था के खिलाफ आवाज उठाई। उनका मानना था '' ये दोनो षोषण की व्यस्वस्था हैं और जब तक इनका पूरी तरह से खात्मा नही हो जाता, तब तक एक अच्छे समाज की निर्मिती असम्भव हैं। इस प्रकार के विचार रखने वाले वो पहले भारतीय थे। जाति व्यवस्था निर्मूलन की कल्पना और आन्दोलन के उसी वजह से वो जनक साबित हुए वे सही मायनों मे 19 वीं षताब्दी के एक महान भारतीय विचारक, समाज सुधारक, समाज सेवी, लेखक, दार्षनिक तथों क्रातिकारी कार्यकर्ता थें।

ज्योतिबा फूले का विचार था कि समाज मे फैली समस्त कुरितियां और परम्पराएं ब्राहमणो ने अपने प्रभाव व वर्चस्व को बढाने एवं अपने स्वार्थ की पूर्ति हेतु फैलाई थी अपने ऐसे स्वार्थो की पूर्ति के लिए उन्होने कई तरह के हथकंडे अपनाए जिनमे वे कामयाब भी रहे।

सामाजिक कुरीतियों की जडे प्राचीन धार्मिक व्यवस्था तक जा पहुंची थी। मनु स्मृति के अनुसार कन्या का विवाह जितनी जल्द हो सके कर देना चाहिए नही तो वह '' पाप की भागी '' बन जाएगी। ज्योतिबा फूले द्वारा रचित '' किसान का कोडा'' नामक रचना से हमे जानकारी मिलती हैं कि किस प्रकार गणेष –चतुर्थी पर किसानो के घर मे गणपति के सामने तालियां बजाकर आरती गाने के बदले मे पुरोहित उनसे दक्षिणा ले लेते थे। ऋषि पंचमी को विधवा किसान औरतों को पानी के गडढे मे डुबकियां लगवाने के लिए मजबूर कर देते थे।

गरीब स्त्रियों की दुर्दषा की जानकारी फूले ने अपनी रचना ''इषारा'' ने दी हैं। की किस प्रकार किसान की पत्नी ने साहूकार से प्रार्थना की कि ''थोडा रहम कीजिए'' कुछ अनाज तो इन मासूम बच्चों के लिए रहने दीजिए। मेरी दोनो हाथ जोडकर आपसे प्रार्थना है '' गरीब नारी का इतना भाषण सुनकर वह साहूकार गुस्से मे ऑखे चढाकर कहता है की '' मूर्ख कही की षूद्रिन होकर तू हमको ज्ञान सिखाना चाहती हैं।

ज्योतिबा फूले का मानना था कि सामाजिक कुरीतियों एंव आडम्बरों को दूर करने का एक मात्र साधन नारी को षिक्षित करना है ताकि वे अपने अधिकारों के प्रति सजग हो सके एंव अपने उपर होने वाले अत्याचारो पर आवाज उठा सके। इसलिए उन्होने सबसे पहले अपनी पत्नी सावित्रीबाई फूले को अपने साथ लेकर पहले प्रयास के रूप मे आम के वृक्ष के नीचे विद्यालय षुरू किया उन्होने खेत की मिट्टी मे टहनियों की कलम बनाकर षिक्षा लेना प्रारम्भ किया इस कार्य पर धर्म पण्डितो ने उन्हे अष्लील गांलिया दी, धर्म डुबाने वाली कहा तथा कई लांछन लगाए। भारत मे ज्योतिबा फूले ने स्त्री षिक्षा का आरम्भ करके नए युग की नीवं रखी।

फूले दम्पति ने 1851 मे पुने के रास्तापीठ मे लडकियो का दूसरा स्कूल खोला उनकी बनाई हुई संस्था

सत्यषोधन समाज मे 1876 व 1879 के अकाल मे अन्नसत्र चलाए और अन्न इकठठा करके आश्रम मे रहने वाले 2000 बच्चों को खाना खिलाने की व्यस्था की 28 जनवरी 1853 को बाल –हत्या प्रतिबंधक ग्रह व्यवस्था की जिसमे कई विधवाओं की प्रसूति हुई व बच्चों को बचाया गया। उनके द्वारा विधवा पुनर्विवाह सभा का आयोजन किया जाता था जिसमे नारी सम्बधी समस्यओं का सामाधान भी किया जाता था।

निष्कर्ष :–

निष्कर्ष रूप मे हम कह सकते है की ज्योतिबा राव फूले ऐसे समाज सुधारक थे जिन्होने भारतीय समाज मे फैली कुरीतियों, आडम्बरों एंव परम्पराओं के विरूद्व जमकर आवाज उठाई एंव नारी के अधिकारों एंव नारी की षिक्षा, समानता के पक्ष मे खुलकर आवाज उठाई । उन्हे विषेष रूप से महिला उत्थान के लिए याद किया जाता है। वे पुरूष प्रधान हिन्दु समाज मे कई षताब्दियों से अज्ञान व अन्याय से घिरी हुई नारियों के लिए आधुनिक युग में वे '' मुक्ति दाता'' बनकर सामने आए । इस प्रकार हम कह सकते है कि नारी मुक्ति आन्दोलन में ज्योतिबा फूले का अहंम योगदान रहा हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थः–

1ण थ्ववसमए डींजउं श्रलंजवतंव ;2007द्धण ळंनजंउ ठववा ब्मदजमतण च्ण्7

2ण राधा कुमार, स्त्री सघर्ष का इतिहास, वाणी प्रकाषन, नई दिल्ली, 2009 पृ0 3

3ण वेद कुमार वेदालंकार (''अनु0'') ''गुलामी महात्मा फूले चरित्र साधने, प्रकाषन समिति, बम्बई 1994 पृ0 13

4ण के0 के0 दत, ए सोषल हिस्ट्री ऑफ मॉडर्न इण्डिया, नई दिल्ली 1975 पृ0 153

5ण मुरलीधर जगताप, पूर्व उद्वरित, पृ0 102.

6ण रामधारी सिहॅ दिनंकर '' संस्कृति के चार अध्याय'' इलाहाबाद, 1954 पृ0 54